मध्यकाल अथवा भक्तिकाल

[परिचय, परिस्थितियाँ, शाखाएँ, विशेषताएँ आदि]

B.A.I एवं B.A.III

हिन्दी साहित्य

प्रस्तुतकर्ता

डॉ. जगदीश शरण

सहायक प्रोफ़ेसर हिन्दी

राजकीय महाविद्यालय भोजपुर

(मुरादाबाद)

(स्वयंनिर्मित)

Scanned with CamScanner

मध्यकाल : मध्यकाल दो कालों में विभाजित – पूर्वमध्यकाल अर्थात भक्तिकाल और उत्तरमध्यकाल अर्थात रीतिकाल।

पूर्वमध्यकाल अर्थात भक्तिकाल : समयावधि – सम्वत 1375 से सम्वत 1700 तक। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार भक्तिकाल में प्रचलित समस्त काव्य साहित्य को दो भागों में बाँटा गया – निर्गुणमार्गी भक्ति साहित्य और सगुणमार्गी भक्ति साहित्य। आचार्य शुक्ल ने इन दोनों प्रकार की

को पुनः दो उपवर्गों में विभाजित किया है —

निर्गुणमार्गी काव्यधारा — 1. ज्ञानमार्गी शाखा। प्रधान कवि और प्रवर्तक — कबीर। अन्य कवि — नानक, दादू, पीपा, रैदास, धरमदास आदि।

2. प्रेममार्गी शाखा। प्रधानकवि और प्रवर्तक — मलिक मुहम्मद जायसी। अन्य कवि — मंझन, कुतुबन, उसमान, नूर मुहम्मद आदि।

सगुणमार्गी काव्यधारा :— 1. रामकाव्य धारा। प्रधान कवि और प्रवर्तक — तुलसीदास। अन्य कवि — अग्रदास, नाभादास, हृदयराम आदि।

2. कृष्णकाव्य धारा। प्रधानकवि और प्रवर्तक — सूरदास। अन्य कवि — नन्ददास, चतुर्भुजदास, ध्रुवदास, आदि।

समानता : भक्तिकाल में प्रचलित विभिन्न काव्य-धाराओं में परस्पर काफी भिन्नता रहते हुए भी एक मुख्य विशेषता यह रही है कि इस काल में रचित समस्त साहित्य का ~~रूप~~ मूल कथ्य भक्ति ही रहा है।

भक्तिकालीन परिस्थितियाँ

1. मुहम्मद तुगलक का शासन, मुगल साम्राज्य का विकास, पठान बादशाहों का काल, राजनैतिक उथल-पुथल का काल, हिंदू जनता पर मनमाना अत्याचार।

2. विभिन्न धर्म-सम्प्रदायों का विकास, बाह्याडम्बरों व भेदभाव का बोलबाला। फलतः भक्ति का विकास।

3. सामाजिक - आर्थिक दृष्टि से इस्लाम का बढ़ता प्रभाव और हिंदू धर्म में संकीर्णता की वृद्धि। नारी की परतंत्रता का युग। सामान्य जनता का शोषण।

4. भक्तिकाल का उदय। विभिन्न काव्यधाराएँ प्रवाहित। विदेशी फारसी भाषा का बढ़ता प्रभाव। साहित्य की दृष्टि से यह युग 'स्वर्णयुग' की संज्ञा से अभिहित।

काव्य-विशेषताएँ :

निर्गुण भक्तिकाव्य :

1- निर्गुण ब्रह्म की उपासना
2. रहस्यवाद का उत्कृष्ट वर्णन
3- शृंगार का उभयपक्षीय वर्णन
4- सामाजिक अन्याय की तीव्र भर्त्सना और विरोध
5- धार्मिक आडम्बर और रूढ़ियों-परम्पराओं का विरोध
6- ~~व~~ व्यापक लोककल्याण की भावना
7- नारी के कामिनी-रूप की घोर निंदा
8- गुरु की महत्ता
9- भजन की महिमा
10- सधुक्कड़ी भाषा का प्रयोग

सूफ़ी काव्य :

1- हिन्दू राजा-रानियों की प्रेम-गाथाओं का वर्णन
2. प्रबन्ध काव्यों की रचना
3- फ़ारसी मसनवी शैली का प्रयोग
4- अवधी भाषा का प्रयोग
5- लौकिक प्रेम के द्वारा अलौकिक प्रेम की अभिव्यंजना
6- खण्डन-मण्डन का अभाव
7- प्रायः दोहा-चौपाई ~~शैली~~ छंदों का प्रयोग

रामकाव्य :

1. राम के उदात्त चरित्र का वर्णन
2. व्यापक लोकधर्म की स्थापना
3- सामाजिक न्याय की प्रतिष्ठा
4- रामराज्य की कल्पना

Scanned with CamScanner

5- व्यावहारिक आदर्शवाद पर बल
6- ब्रज और अवधी भाषा का प्रयोग
7- दास्य भक्ति-भावना पर बल
8- प्रबन्ध और मुक्तक दोनों प्रकार की रचनाओं का सृजन
9- सामाजिक और शास्त्रीय मर्यादा पर बल

कृष्ण काव्य :

1- कृष्ण लीला का उत्कृष्ट वर्णन
2. श्रृंगार का अनुपमेय वर्णन
3- प्रकृति का उन्मुक्त अंकन
4- प्रमुखतः सख्य-भक्ति भावना का ~~प्राधा~~ प्राधान्य
5- ब्रजभाषा का प्रयोग
6- मुक्तक काव्य की प्रधानता
7- प्रेम का अलौकिक वर्णन
8- आतिशय अलंकार प्रियता
9- गहन, मार्मिक विरहानुभूति का ~~वि~~ वर्णन
10- काव्य और संगीत का समन्वय

प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ :

ईश्वरदास : जन्म अज्ञात। रचना- सत्यवती कथा। शैली चौपाई और दोहा। कुल 58 दोहे। भाषा ~~ठेठ~~ ठेठ अवधी।

कबीर : जन्म - विक्रम संवत् 1455, जेष्ठ पूर्णिमा। निर्गुणमार्गी काव्यधारा के एकछत्र सम्राट। जन्म-स्थल - काशी का लहरतारा नामक तालाब। ~~मृत्यु संवत् 1575 में मगहर में।~~ नीरू व नीमा नामक जुलाहा दम्पति के यहाँ पालन-पोषण। कमाल और कमाली नामक दो सन्तानों के पिता। पत्नी का नाम - लोई। रामानन्द के शिष्य। मृत्यु संवत् 1575 में मगहर में। अद्वैतवाद के पोषक। समस्त रचनाएँ 'बीजक' में संकलित। संकलनकर्ता - धरमदास। 'गुरु ग्रंथ साहिब' में कबीर की बानियाँ संकलित।

Scanned with CamScanner

रैदास : कबीर के समकालीन। बनारस के निकट मडुवाडीह नामक स्थान में जन्म। रामानन्द के शिष्य। विनम्र स्वभाव के निर्गुणवादी सन्तकवि। साखियों और पदों की रचना। चालीस पद गुरु ग्रन्थ साहिब में संकलित।

धरमदास : कबीर के शिष्य। 'बीजक' के सम्पादक। बाँधवगढ़ के निवासी और जाति के बनिए। 'बीजक' का सम्पादन करने के कारण प्रसिद्ध हुए।

नानक : कार्तिक पूर्णिमा के दिन सम्वत् 1526 को जिला लाहौर के गाँव तलवण्डी में जन्म। पिता कालूचन्द और माता तृप्ता। पत्नी का नाम - सुलक्षणी। श्रीचन्द और लक्ष्मीचन्द नामक दो पुत्रों के पिता। इनकी समस्त रचनाएँ 'गुरु ग्रंथ साहिब' में संकलित हैं।

सुन्दरदास : जन्म - चैत्र शुक्ल सम्वत् 1653 में जयपुर के द्यौसा नामक स्थान में। पिता परमानन्द और माता सती। दादू के शिष्य। समस्त सन्तकवियों में सुन्दरदास ही सुशिक्षित। रचना - सुन्दरविलास।

मलूकदास : जन्म सम्वत् 1631 में कड़ा (इलाहाबाद) में। रचनाएँ - रतनखान, ज्ञानबोध। 'अजगर करै न चाकरी पंछी करै न काम, दास मलूका कहि गए सबके दाता राम' प्रसिद्ध दोहा इन्हीं का है।

कुतुबन : शेख बुरहान के शिष्य। रचना - मिरगावती।

~~मंझन - मधुमालती~~

मलिक मुहम्मद जायसी : जन्मकाल 906 हिजरी। जन्मस्थान - जिला रायबरेली (उत्तर प्रदेश) का जायस नगर। पिता का नाम मलिक शेख ममरेज अथवा मलिक राजे अशरफ। गुरु का नाम फकीर शेख मोहिदी। एक आँख और एक कान से रहित। लगभग 66 रचनाओं के प्रणेता किन्तु 'पद्मावत' से प्रसिद्ध हुए। हिन्दी शिकारी के तीर से सन् 1542 में मृत्यु।

Scanned with CamScanner

सूरदास : जन्म से अन्धे। जन्म दिल्ली के समीप सीही नामक स्थान में सम्वत 1535 में। 'अष्टछाप' के प्रमुख कवि। पुष्टिमार्ग के जहाज। गुरु वल्लभाचार्य। निधन सम्वत 1640 में गोवर्द्धन के निकट पारसौली नामक गाँव में। लगभग 25 ग्रन्थों के प्रणेता किन्तु प्रसिद्धि 'सूरसागर' और उसमें रचित 'भ्रमरगीत' से मिली। कृष्णकाव्यधारा के प्रवर्तक।

तुलसीदास : रामकाव्यधारा के प्रमुख कवि और प्रवर्तक। पिता आत्माराम और माता हुलसी के घर सम्वत 1589 को एटा जिले के सोरों नामक स्थान में जन्म। पत्नी का नाम रत्नावली। पत्नी की फटकार से संदेह-दूर में प्रवृत्त। निधन सम्वत 1680। बचपन का नाम रामबोला। रचनाएँ — दोहावली, रामाज्ञा प्रश्न, कवितावली, हनुमान बाहुक, श्रीरामचरितमानस, विनय-पत्रिका, पार्वती मंगल, जानकी मंगल, रामलला नहछू आदि। व्यापक प्रसिद्धि 'श्रीरामचरितमानस' से मिली।

अन्य कवि और रचनाएँ

उसमान — चित्रावली
कासिमशाह — हंस जवाहिर
नूर मुहम्मद — इन्द्रावती, अनुराग बाँसुरी
नन्ददास — रूपमंजरी, भँवरगीत, रास पंचाध्यायी
परमानन्ददास — परमानन्दसागर
चतुर्भुजदास — द्वादशयश, हितजू को मंगल
हितहरिवंश — राधासुधानिधि, हित चौरासी
मीराबाई — नरसीजी का मायरा, गीतगोविंद टीका, राग गोविन्द, राग सोरठ
ध्रुवदास — सिंगारसत, नेहमंजरी, भजन सत आदि
छीहल — पंचसहेली, बावनी
नरोत्तमदास — सुदामा चरित्र, ध्रुवचरित्र

आलम — माधवानल कामकन्दला

गंग — फुटकल पद

केशवदास — कवि प्रिया, रसिक प्रिया, रामचन्द्रिका, वीरसिंह देव चरित, रतनबावनी, जहाँगीर जस चन्द्रिका

रहीम — सतसई, बरवै नायिका भेद, मदनाष्टक

सेनापति — कवित्त रत्नाकर, काव्यकल्पद्रुम

पुहकर कवि — रसरतन